प्रकाशक—
छोटेलाल जैन मन्त्री
पुरातत्वान्वेषिणी
जैन परिषद् कलकत्ता।

मुद्रक—
रिखबदास बाहिती,
"दुर्गा प्रेस"
नं० ४, चोरबगान,
कलकत्ता।

श्रीयुत ______________________________ को

सप्रेम भेंट।

विषय सूची।

मंगलाचरण

—※—

भुवनाम्भोजमार्त्तण्डं धर्मामृतपयोधरम् ।
योगिकल्पतरुं नौमि देवदेवं वृषध्वजम् ॥

❀ ❀ ❀ ❀

नमस्तस्मै सरस्वत्यै सर्वविज्ञानचक्षुषे ।
यस्याः सम्प्राप्यते नाम्ना पारं सज्ज्ञानवारिधेः ॥

❀ ❀ ❀ ❀

रत्नत्रयपवित्राणां मुनीनां गुणशालिनाम् ।
वंदेऽहं वोधसिन्धूनां पादपद्मद्वयंसदा ॥

आराधना कथाकोष ।

विशेष द्रष्टव्य

समर्पण

सततधर्माचारपूतान्तस्करण धर्मप्राण परम पूज्य

पिता श्रीरामजीवनदासजी ।

यह सुमन आपको सादर समर्पण करता हूं ।

आपकी सदा यही इच्छा रहती थी कि हम लोग
शिक्षित, दीक्षित, सच्चरित्र और स्वधर्म प्रेमी
हों । इस लिये आपने अपने जीवन
कालमें हमारे लिये कोई भी
उपयुक्त उपाय उठा न
रखा था ।

आप सर्व प्रकारसे आदर्श स्वरूप थे, अतएव
भगवानसे प्रार्थना है कि आपका आदर्श
हम सब भाइयोंको सदा सत
पथ प्रदर्शक हो ।

विनीत—

छोटेलाल जैन (श्रावक)

प्रस्तावना.

आज मैं अपना परम सौभाग्य समझता हूं, कि इस "प्रथम ऐतिहासिक पुष्प" की—जो कि मेरा प्रथम प्रयास है, मैं श्रीजिनेन्द्रमुखोद्भुत श्रीजिनवाणी माताके चरणोंमें श्रद्धाञ्जलि दे रहा हूं। प्रथम तो मैं सर्व प्रकारसे अयोग्य दूसरे यह मेरा प्रथम प्रयोग और तीसरे मेरा अल्प उद्योग इस पुस्तकको उचित सेवा न कर सका है तथापि मेरी यह धृष्टता हृदयस्थ उमङ्गकी तरङ्ग, जैन इतिहासकी लालसा और विद्वद्जनोंकी उत्तेजना मात्र है।

इस प्रकारकी पुस्तकें जिस रूप और विधिके साथ लिखो जानी चाहिये तदनुसार यह नहीं लिखी गई है, कारण न तो मैं लेखक हूं न मुझे अनुभव है और न मुझे अपने व्यापारादिसे अवकाश है। जैन समाजमें इस प्रकारकी पुस्तकोंकी अत्यावश्यकता होनेपर भो ऐसी पुस्तकें प्रकट न होती देख इस त्रुटिको प्रकाशमें लानेके अर्थ मैंने यह चपलता की है, आशा है यह धृष्ट साहस भी जैनाकाशमें अन्तर्हित हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तकमें अधिकांश लेख पर्याप्त परिश्रम न करनेके कारण तथा जीर्ण होनेके कारण अधूरे ही रह गये हैं। कलकत्ता एक बड़ा भारी विद्या केन्द्र है, ऐतिहासिक चर्चादि भी यहां परिपूर्ण है और धीमान और श्रीमान जैनियोंकी संख्या भी यथेष्ट है। आशा है मेरी तरह अन्य कोई सहधर्मी बन्धु अधूरे

लेखोंको पुनः पढ़कर पूर्ण करेंगे और इस पुस्तकका द्वितीय संस्करण परिपूर्ण रूप और विधिसे प्रकट होगा।

इस छोटीसी पुस्तकको प्रगट करनेका मुख्य उद्देश्य यही है कि हमारे भारत-वर्षके जैनी भाई अपने अपने स्थनोंके मन्दिरों और चैत्यालयोंमें स्थित मूर्त्तियों और धातु यन्त्रपत्रादिकोंको इसी प्रकार प्रकाशमें लावें और जैन इतिहासको पूर्ण करते हुए अपने पूर्वजोंकी कृतियोंका स्मरण कर तथा उनके धार्मिक श्रद्धानोंका अनुसरणकर अपने हृदयको पुनः धर्मोत्साहसे भर भावी सन्तानको आदर्श बनानेकी चेष्टा करें। आशा है इस नम्र निवेदन पर जैन समाज ध्यान देगी और मेरे उद्देश्यको सफलीभूत कर मुझे अनुगृहीत करेगी।

जैन समाजके सुविख्यात, अनेक ग्रन्थोंके सुयोग्य संपादक विद्वद्वर और श्रद्धेय पण्डित गजाधरलालजी न्यायतीर्थने इस पुस्तकके निर्माणमें मुझे जो सहायता की है उसके लिये मैं आपका पूर्ण कृतज्ञ हूं।

महामतिभिर्निःशेष सिद्धान्त पथ पारगैः
क्रियते यत्र दिग्मोहस्तत्र कोऽन्य प्रसर्पति... (श्रीशुभचन्द्र)

अन्तमें पाठकोंसे सविनय मेरा यही निवेदन है, कि मेरी अयोग्यता पर ध्यान देकर मेरी त्रुटियोंको क्षमा करेंगे...क्या चन्द्र-मण्डलमें तारा भी नहीं टिम टिमाते किं बहुना।

कलकत्ता, श्रुत पञ्चमी मंगलवार वीर निर्वाण सं० २४४६।

विनीत—
छोटेलालजैन।

बंगालमें जैनियोंके निवासका इतिहास।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भारतके इतिहास निर्माणार्थ जो सामग्री जैन पुरातत्व प्रदान कर सकता है वह और कहीं शायद ही प्राप्त हो सकती हैं। भारतवर्षका अल्पाधिक जो इतिहास प्रस्तुत हुआ है उसमें सहायताका वहुत वड़ा भाग जैनियोंका है। अब भी विना जैनियोंकी सामग्रीके अवशेष इतिहास निर्माण नहीं हो सकता।

अवतक यदि जैन लोगोंको ऐतिहासिक विषयोंका शौक होता तो निःसन्देह आज हिन्दुस्थानका इतिहास एक सामान्य वात हो जाती।

यदि भारतके जैनी भाई विशेष परिश्रम न कर केवल अपनी मूर्त्तियोंके तथा यन्त्र पत्रादिके लेखादि और शास्त्रोंकी प्रशस्तियों का ही पुस्तक रूपमें प्रकाशित कर देवें तो इतिहासमें एक वड़ी भारी और वहुमूल्य सहायता प्राप्त हो सकती है साथ ही ऐसी ऐसी सूचियोंसे अनेक अश्रुतपूर्व वातें ज्ञात हो सकती हैं।

यह वङ्गाल देश प्राचीन कालसे ही जैनियोंका निवास-स्थान है तथा तीर्थकरोंने यहां विहार कर अपनी दिव्य-ध्वनिसे इस देश वासियोंको सच्चे धर्म तथा मोक्ष-मार्गका उपदेश दिया था। इस समय भी जैनियोंके सबसे वड़े तीर्थस्थान इसी पूर्व देशमें हैं। अब भी इस देशमें चारों तरफ प्राचीन जैनी फैले हुवे

पाये जाते हैं जो कि अब सराक कहलाते हैं, यह सराक शब्द् श्रावकका अपभ्रंश है। पर अब ये प्राचीन जैनी अपनेको भूल चले हैं। वैदिक धर्मानुयायी जिस प्रकार पहिले जैनियोंपर अत्याचार करते थे उसी प्रकार इन बङ्गालके श्रावकोंको भी न छोड़ा और इनको शूद्र कहने लगे। अब भी इन सराकोंका जो शुद्धाचरण है वैसा बङ्गालके अनेक बड़े बड़े ब्राह्मणोंका भी न होगा। मानभूम जिलेके पञ्चग्राम, पाकवीर, बुरंम, तेलकूपि, वेलोंजा, देवलटांड, अरसा, छर्रा पवनपुर, देवली इत्यादिः बाकुड़ा जिलेके बहुलारा और विष्णुपुर ग्रामोंमें: वीरभूम जिलेके नन्दीग्राममें: वर्द्धमान जिलेके उज्जयिनी ग्राममें; राजशाही जिलेके मन्दोल ग्राममें; मयूरभंजके कोसलि ग्राममें: उत्कलप्रदेश (उड़ीसा) में और, पुरुलिया-मानबजार रोड़ पर पालमा ग्राममें भग्नावशेष मन्दिर और दिगम्बर मूर्त्तियाँ तथा प्राचीन श्रावक पाये जाते हैं। मेदिनीपुर जिलेके चन्द्रकोण ग्राममें तथा कूचविहार भागलपुर हजारीबाग आदि प्रान्तोंमें भी सराक पाये जाते है। इन सराकों (प्राचीन श्रावकों) का विशेष हाल जानना हो तो पाठक "जैन धर्म भूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी महाराज" कृत इन "सराकोंका तथा बंगालका स्मारक" देखें।

इन प्राचीन बंगाली जैनोंके सिवाय, बंग देशमें तीर्थराज होनेके कारण जैनियोंका अन्य प्रान्तोंसे आना जाना सदासे होता ही रहता था पर व्यापर निमित्त भी अनेक जैनी यहां

आकर बसे थे और इस समय भी ऐसे प्रवासी जैनियोंकी संख्या यहां अत्याधिक है। आजकल जो प्रवासी जैनी यहां बसे हुवे हैं वे यहां कब आये इसका इतिहास इसी पुस्तकमें की सामग्रीसे संक्षेपमें लिखना इस भूमिका का मुख्य प्रयोजन है। अस्तु हमें यह देखना है कि प्रवासी जैन समाजके दो संप्रदायों—दिगम्बर और श्वेताम्बरोंमेंसे प्रथम यहां कौन आया ?

कितने एक विद्वानोंका यह मत है कि इन प्रवासी जैनियोंके अग्रसर श्वेताम्बर जगत शेठोंका वंश है। कई विद्वान यह भी कहते हैं, कि वर्त्तमान सम्मेद शिखर असल सम्मेदाचल नहीं है पर यह जगत सेठका काल्पनिक सम्मेदगिरि है। इन प्रश्नोंका उत्तर देनेके पूर्व यहां जगत शेठोंका कुछ इतिहास उल्लेख करनेकी आवश्यकता है।

जगत शेठके पूर्वज श्वेताम्बर मतानुयायी गेल्हड़ा ओसवाल वंशी थे। ये ओसवाल लोग प्रथम वैदिक धर्मानुयायी थे और ओसिया ग्राममें (राजपुताना) में रहते थे। १६वीं शताब्दीके पूर्व भागमें श्वेताम्बर आचार्य श्रीजिनहंससूरिने इनको जैनी बनाया और तबसे ये ओसवाल कहे जाने लगे।*

---

* ओसवाल दिगम्बरी भी होवे हैं, यह अभी अनुसंधान नहीं किया गया है कि इनकी उत्पत्ति किस प्रकार है। प्रस्तुत पुस्तकके पृष्ट २५ लेख नं० ६ से स्पष्ट है कि सं०१६४१ में मूलसंघके ओसवालने पुरुसोनिया ग्राममें प्रतिष्ठा करवाई थी।

संवत् १७०६ में नागोरसे एक साह हीरानन्द ओसवाल पटने आये और सं० १७६८ में परलोक यात्रा की। यहीं से श्वेताम्बरोंका बंगाल वास आरम्भ होता है। इन हीरानन्दके ७ पुत्रोंमेंसे ५ वें पुत्र माणिकचन्दने अपनी वहिनके पौत्र फतेचन्दको गोद लिया। माणिकचन्द अपने पोष्य पुत्र फते-चन्दके साथ पटनेसे सं० १७५७ में ढाका (बंगाल) आकर कारवार खोला पश्चात ये मुरशिदावाद रहने लगे। येही फते-चन्द प्रथम जगत शेठ हुवे।

यद्यपि इस पुस्तकमें के कितने प्राचीन लेख पढे नहीं गये तो भीं कुछ पढ़े गये लेखोमेंसे एक लेख (पृष्ठ २७ नं १६) संवत् १६७६ का हैं जिसमें सम्मेद पर्वत पर प्रतिष्ठा की गई लिखा है इससे प्रमाणित होता है कि जगत शेठके होनेके पूर्व ही बंगालमें दिगम्बरी आने लगे थे और वर्त्तमान सम्मेद शिखर ठीक सम्मेदाचल है तथा जगत शेठका काल्पनिक नहीं हैं। सम्मेद शिखरके आसपास अबतक देवग्राम, पर्वतपुर, मोहल, बेलोट आदि ग्रामोंमें प्राचीन श्रावक (सराक) पाये जाते हैं। ये अपने इष्ट देवोंको नंगे (दिगम्बर) मानते हैं तथा पार्श्वनाथ, आदिनाथ इत्यादि नामकी पूजा करते हैं कन्द मूलादि पंच उदंबर भक्षण नहीं करते हैं। अहिंसा धर्म का तो इतना कट्टरपना रखते हैं कि "काटा" शब्द सुनकर भोजन छोड़ देते हैं। कितनोंके रात्रि भोजन त्याग भी है। दिगम्बर मन्दिरों और प्रतिमाओंके भग्नावशेष चिह्न भी पाये

जाते हैं। १६ मई सन १८७२ में श्वेताम्बरोंने पालगंजके राजाको जो इकरारनामा लिख कर दिया है उसमें स्पष्ट लिखा है कि जैन श्वेताम्बरी लोग परदेशी हैं जो बहुत दूर देशमें वास करते हैं और जैनियोंके प्रधान तीर्थ श्री पारसनाथजी पर्वतको केवल दर्शनके लिये ही जाते हैं। उक्त प्रमाणोंसे यह भली प्रकार सिद्ध हो जाता है कि यही सम्मेदाचल है तथा दिगम्बरियोंका ही वास यहां प्राचीन कालसे है।

अब रही इस प्रमाणकी विशेष बात कि यहां प्रवासी जैनियोंमेंसे प्रथम वास किनका हुआ। मैं ऊपर कह आया हूं कि प्रथम ही जगत शेठके पूर्वज पटना आये। पर विहार प्रांतमें तो पहिले हीसे दिगम्बरोंका वास था जब कि ओसवालोंकी स्थापना ही नहीं होने पाई थी इसी पुस्तकके लेख नं० ६ पृष्ठ ११ पर सं० १४५८ में पटनेमें प्रतिष्ठाका स्पष्ट उल्लेख है तथा पृष्ठ २६ पर लेख नं० ९ में लिखा है कि सं० १६३१ में विहार मण्डलमें प्रतिष्ठा हुई। पटनेसे जगत शेठके पिता माणिकचन्द सं० १७५७ में ढाका आकर व्यापार करना आरम्भ किया—पर ढाकामें भी दिगम्बरी इनसे पहिले वसे हुवे ही नहीं थे पर पृष्ट २४ के लेख नं० ७ से ज्ञात होता है कि सं० १७३२ में काष्ठा संघके भट्टारक श्रीरूपचन्द्रजीने ढाके जाकर प्रतिष्ठा की थी। यह प्रतिष्ठा साह गुलालदास अग्रवालने अपनी स्त्री, तीन पुत्र और एक भतीजेके साथ करवाई थी। पाठक विचार कर सकते हैं कि मुसलमान राज्यमें और तिसपर भी औरङ्गजेबके शासन कालमें क्या कोई जैनी भाई एकाएक

आकर मन्दिर बनवानेका साहस कर सकता है ? कदापि नहीं। उक्त श्रेष्ठीका जब ढाकामें कारवार जम गया होगा तब वहाँ आपने परिवार सहित वास किया होगा और तत्पश्चात् जब आपने देखा कि अब तो यहीं रहना है तब कहीं प्रतिष्ठा करवाई होगी।

ढाकेके मन्दिरका अभी पता नहीं लगाया गया है पर वहांके मन्दिरकी प्रतिमायें तथा यन्त्र इधर उधर हो गये हैं। पटनेके एक जैन मन्दिरमें (सम्भवतः श्वेताम्बर) भी उपरोक्त श्रेष्ठीकी प्रतिष्ठित एक चरण पादुका है जिस पर यह लेख है: –

संवत् १७४२ वर्षे मार्ग शीर्ष वदी पञ्चमी-गुरौ ढाका मध्ये .. काष्ठा संघे माथुर गच्छे पुष्कल गणे लोहाचार्यान्वये दिगम्बर धर्म भट्टारक रूपचन्द्र प्रतिष्ठितं अग्रवाल गांगुल गोत्रे सा० गुलालदास भा० धरणदे पुत्र० सावल सिंघ, अमर सिंघ केशरसिंघ······प्रतिष्ठा कारापितानि सेरपुरेन्तिके······ढाकायां प्रतिष्ठा ···· पादुकानां। श्रेयोस्तुः पादुका आदिनाथ की। गुरु पादुका।

ढाकाके मन्दिरके कई यन्त्र और मूर्त्तियां कलकत्तेके पुरानी वाड़ी नामक चैत्यालयमें है—यह चैत्यालय १५० वर्षसे भी अधिक प्राचीन है। इससे यह मालूम होता है कि संभवतः इन श्रेष्ठीका कारबार कलकत्ता, पटना आदि स्थानोंमें भी था या ये ढाका छोड़कर अन्यत्र बस गये हों, या और कोई घटना हुई हो ! जो हो, इससे यह तो स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि श्वेताम्बरोंने बङ्गाल वासमें दिगम्बरोंका अनुसरण किया है।

यह एक बड़ी विचित्र बात है कि सं० १७३२ में औरंगजेबके समय बङ्गालमें प्रतिष्ठाका खूब जोर था। इस समय ढाकेके सिवाय सम्मेद शिखरपर भी प्रतिष्ठायें हुई हैं जो पुस्तक पढ़नेसे मालूम हो जायगी।

श्रीयुत पी० सी० नाहर (श्वेताम्बरी) कृत "जगत शेठोंकी वंशावली—कलकत्ता सन १९२३" में लिखा है कि:—"सिवाय फरमानोंके जो बङ्गालके जैनियोंके मुखिया जगत शेठोंको दिये गये एक भी मूर्त्ति या चरणपादुका पारसनाथ पर्वत (सम्मेद शिखर) पर नहीं हैं जिनमें प्राकृत या संस्कृत लेख हों और जगत शेठोंका उल्लेख हो।" अतएव इससे जाना जाता है कि यह पर्वत यद्यपि दोनोंका पूज्य स्थान है तथापि प्राचीन कालमें इस पर्वत पर मूर्त्तियां और पादुकाएं दिगम्बराम्नायकी ही रहती थीं बादमें श्वेताम्बर भी रखने लगे। मैं जहां तक जानता हूं मधुवनके श्वेताम्बर मन्दिरादिमें सबसे प्राचीन मूर्त्ति संवत् १८५४ की है और पर्वत पर सबसे प्राचीत लेख सं० १८२५ का है। मैं अभी सम्मेद शिखरके दिगम्बर लेखोंका संग्रह नहीं कर सका हूं। मेरे पिता कहा करते थे कि मैंने पर्वत परके जलमन्दिरमें अनेक दिगम्बर मूर्त्तियोंका दर्शन कई बार किया है*। पर जबसे मुकद्दमा चलना शुरू हुआ है तबसे वे पूज्य प्रतिमायें किसी दुष्टने गायब कर दी हैं। इस बातके प्रमाण जैनेतर यात्रियोंने भी लिखे

---

* पूज्य पण्डित झम्मनलालजी तर्कतीर्थ तथा अन्य अनेक प्रख्यात सज्जन भी इसका समर्थन करते हैं।

हैं। पर इसी पुस्तकसे जाना जाता है कि सम्मेद पर्वत पर दिग-म्बरोंने निम्न लिखित सम्वतोंमें प्रतिष्ठायें की हैं:—

संवत् १६७६,१७२६,१७३२,१८४१,१८७८,१६६६,१६७६

सहयोगी श्वेताम्बरोंका यह कहना है कि हमारे पास वाद-शाह अहमद शाहका सन १७५२ (संवत् १८०८) का फरमान है जिसमें लिखा है कि पारेशनाथ पहाड़ जो जैन श्वेताम्बरोंका पूजन स्थान है—जैन श्वेताम्बरोंका है—राजभक्त द्वितीय जगत शेठ महतावराय श्वेताम्बरीको यह पर्वत इस लिये दिया जाता है कि वह अपने धर्मानुकूल पूजा करे इत्यादि।" पाठक इसी छोटीसी पुस्तक और उसपर भी कलकत्ते के ही जैन मन्दिरोंमें स्थित मूर्त्तियों और यन्त्रोंके लेखोंसे विचार कर सकते हैं, कि जब इस समय और इस समयसे पूर्व भी दिगम्बरोंका यहां पूर्ण समारोह रहता आया, तब केवल श्वेताम्बरोंको ही यह पहाड़ दिया जाय यह कहांतक सम्भव हो सकता है। तिसपर भी फर-मानमें दिगम्बरोंका उल्लेख तक नहीं? इस फरमानके वाक्योंसे ही पाठक इसकी सत्यताका पता लगा सकते हैं ।

श्वेताम्बरोंके पास तृतीय जगतशेठ खुशालचन्दका लिखा हुआ सन १७७५ (संवत् १८३१) का एक परवाना है जिसमें लिखा हैं कि "अनेक दिन हुए जबसे बादशाहोंकी हुकूमत है, पारसनाथ पर्वत जो जैन श्वेताम्बरोंका पूज्य तीर्थ माना जाता है, मेरे पिताको दिया गया था कारण हम लोग भी जैन श्वेताम्बरी थे ·····यह पर्वत और पवित्र स्थान जैन श्वेताम्बरोंके

मुसलमानी राज्यकालमें भारतीय धर्मोपर बड़ा भारी संकट था पर उस समय भी दूर दूरसे धर्म सर्वस्व जैनी भाई सम्मेद् शिखरादि आकर केवल यात्रा ही नहीं पर समारोहके साथ प्रतिष्ठादि भी करवाया करते थे—प्रतिष्ठाचार्य केवल पंडित या श्रावक ही नहीं होते थे पर पूर्ण संयमी आचार्य और भट्टारक भी साथ साथ आकर प्रतिष्ठा किया करते थे। यह बड़ी ही विचित्र बात है कि संवत् १७३२ में बंगालमें प्रतिष्ठाका पूरा पूरा जोर था जब कि औरंगजेब शासन करता था।

यह भी एक विचारणीय बात है कि प्रतिष्ठायें पर्वतके ऊपर भी हुई हैं तथा पर्वतके नीचे मधुवनमें भी जैसा लेखोंमें उल्लेख किया गया है।

साह जीवराज पापड़ीवाल द्वारा करवाई हुई प्रतिष्ठाओंमें सहर मुड़ासा तथा रावल शिवसिंहका उल्लेख हुआ है। यह मुड़ासा सम्भवतः राजपुतानेमें होना चाहिये। रावलकी उपाधि भी राजस्थानवासी क्षत्रिय राजाओंको ही प्रायः हुआ करती हैं।* इन साह जीवराजने सं० १५३३ में भ० अजयकीर्त्ति द्वारा तथा सं० १५४८ में भ० जिनचन्द्र द्वारा अनेक मूर्त्तियोंकी प्रतिष्ठा करवाई हैं। कलकत्तेके पास हुगली नगरमें एक अति प्राचीन जैन मन्दिर हैं, उसमें सब प्रतिमायें इन्हीं श्रेष्ठीकी प्रतिष्ठित

---

* इनको सं० १५४८ की सब प्रतिमाओं पर राजा शिवसिंहका उल्लेख है पर एक प्रतिमा पर राजा रामसिंहका उल्लेख है। क्या ये दोनों राजा भाई थे या और कुछ ? (पृष्ठ १०—न० ६)।

हैं। क्या यह संभव नहीं हो सकता कि सं० १५३३ या १५४८ में इनका कारवार हुगली में था ? उस समय कलकत्ता एक छोटासा ग्राम था और हुगली व्यापार केन्द्र था। पर यह निश्चय से नहीं कहा जा सकता है। इन्हीं भट्टारक जिनचन्द्र और साह जीवराजकी इसी संवत्की प्रतिष्ठित एक प्रतिमा मद्रास प्रांतके विजगापटम जिलेके स्रु ंगवरपुकोट तालुकमें लक्कवरपुकोटा ग्रामके वीरभद्र नामक मंदिरमें भी है जिसपर लेख भी हिन्दी (नागरी) ही में है। दूसरी प्रतिमा कासिमबाजार (बंगाल)के नमिनाथ नामक श्वेताम्बर मन्दिरमें हैं। दो प्रतिमायें पटनेके श्वेताम्बर मन्दिरमें है। इन भट्टारक और श्रेष्ठीकी प्रतिष्ठित प्रतिमायें अनेक जगह पाई जाती हैं अतः मालूम होता है कि ये महानुभाव प्रतिष्ठित प्रतिमाओंको श्रावकोंको चैत्यालय और मन्दिरोंमें विराजमान करनेके हेतु दिया करते थे। पृष्ट ६ लेख नं० ३६(६) से पता लगता है कि इनका वंश सं० १८२६ तक विद्यमान था।

इस पुस्तकमें सबसे प्राचीन मूर्त्ति संवत् ६०७ की है तथा यन्त्र संवत् १५८६ का है। अन्तिम समयकी मूर्त्ति सं० १६७६ की और यन्त्र सं० १७७७ का है।

पाठक विचार सकते हैं कि इस प्रकारकी पुस्तकोंसे कितना लाभ हो सकता है। आशा है लेखमें जो त्रुटियां हुई हैं उनको पाठक क्षमा करेंगे और सूचित भी करनेकी उदारता दिखायेंगे।

विनीत—

श्री अक्षय तृतीया गुरुवार सं० १६७६

लेखक।

मंदिरोंका परिचय।

१ श्री नया मन्दिर—अन्दाज १५।१६ वर्ष हुए जब बना था पर अभी पूर्ण नहीं बन पाया है कार्य चालू है।

२ बड़ा मन्दिर—अन्दाज १२०।१२५ वर्ष प्राचीन—हाल ही जीर्णोद्धार हुआ है जिसमें सेठ हजारीमलजी जमनाधरजी सरावगी (श्रावक) के २५।३० हजार रुपये व्यय हुए हैं।

३ हुगली मन्दिर—यह मन्दिर वीस पंथी दिगम्बराम्नायका है अतएव वहां क्षेत्रपालकी मूर्त्ति होनेके कारण अब यह भैरों मन्दिरके नामसे प्रख्यात हो गया है। यह मन्दिर ३००।४०० वर्ष प्राचीन था पर ८।१० वर्ष हुए जब कलकत्तेके भाइयोंने इसका जीर्णोद्धार किया था। हुगली कलकत्तेसे २३ मील पश्चिम—उत्तर गङ्गा नदीके दक्षिण-तटपर —चन्दननगर (फ्रांसडांगा) के पास है। स्टेशनका नाम चिनसुरा है।

४ वेलगछिया उपवन मन्दिर—१०० वर्ष प्राचीन था पर अब पुनः निर्माण कर स्थानीय सेठ सेढ़मलजी दयाचन्दजी श्रावकने प्रायः दो लक्ष रुपये लगाये हैं। यह उपवन मन्दिर कलकत्तेसे २॥।३ मील पूर्व—उत्तर है।

५ उत्तरपाड़ा मंदिर—संवत् १९५२ में बना था। कलकत्तेसे ६॥ मील पश्चिम उत्तर, गङ्गाके दक्षिण तटपर है।

६—पुरानी वाड़ी—अंदाज १५० वर्ष प्राचीन है। अब इसका जीर्णोद्धार होनेवाला हैं।

७ वाली मन्दिर—१५०।१७५ वर्ष प्राचीन था पर अब इसका पूर्ण रूपसे जीर्णोद्धार हो चुका हैं। यह कलकत्तेसे ६ मील पश्चिम उत्तर गङ्गाके दक्षिण तटपर है।

यहाँ दो चैत्यालय और थे – एक अमरतल्ला (आरमेनियन स्ट्रीट) में दूसरा कोलूटोला में। प्रथम चैत्यालय उठ जानेके बाद वहां की प्रतिमायें कोलूटोलामें सम्मिलित कर दी गई थी पर यह चैत्यालय भी टूट जानेसे प्रतिमायें बड़े मन्दिरजीमें विराजमान कर दी गई। कोलूटोले पर ५।६ वर्ष पूर्व मुसलमानोंका आक्रमण हुआ था जिससे कई प्रतिमायें दुष्टोंने खण्डित कर दी थीं तथा कई चुरा ले गये थे।

नोट—श्री नये मंदिर (जो स्थानीय पंचायतीकी तरफसे बनाया गया है) को छोड़ उपरोक्त सब मंदिर देशी अग्रवालोंके बनाये हुवे हैं।

॥ * ॥ श्रीजिनाय नमः ॥

प्रतिमा-विभाग

——:*:——

श्रीनयामन्दिर नं० ८२ लोअर चीतपुर रोड।

प्रतिमा तीर्थंकर	आसन	पदार्थ।	अवगाहना। चौड़ाई ऊंचाई।
१ नेमिनाथ—	पद्मासन	श्वेतपाषाण	११+१४।

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवाः साह जीवराज पापड़ीवाल शहर मुड़ासा।

२ चन्द्रप्रभु—	प०	श्वे० पा०	६+११॥

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारकजी श्री जिनचन्द्रदेव, साह जीवराज पापड़ीवाल नित्यं प्रणमति सौख्यं ——श्रीराजा—शहर मुड़ासा।

३ पार्श्वनाथ—	प०	श्वे० पा०	७+११

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक जी श्री जिनचन्द्रदेव, साह जीवराज पापड़ीवाल नित्यं प्रणमन्ति राजा श्योसिंह रावल शहर मुड़ासा।

४ सिद्धमहाराज—	खड्गासन	धातु	२+३॥=]

संवत् १८६६ ········ शु० १५ ······ गुरु प्र०

५ पार्श्वनाथ—ख० धा० १ +२॥।

संवत् (१६१६) लेख अस्पष्ट

६ चौबीसी—प० धा० २ +३।

संवत् १६५७ वैशाख वदी ३ वार सोम भट्टारकजी श्रीगुण-चन्द्र जी तस्य शिष्य ब्रह्मचारी हेमसागरजी भा० प्र० मधुकपुर ।

७ चन्द्रप्रभु—प० धा० ३+४

संवत् १६५६ माघ शु० ५.........

८ चन्द्रप्रभु—प० स्फटिक ३+४

संवत् १६६६ मि० भा० शु० ५। श्री० मू० सं०
श्री० दिग० कुन्दा० श्री सम्मेदाचल प्रतिष्ठितं।

९ नेमिनाथ—प० कृष्ण— पा० ३+३॥

संवत् १६६७ फा० व० १५ राणोली प्र० फरिह.........

१० आदिनाथ—प० धा० ५ +६।

श्रीवीर सं० २४४६ वि० सं० १६७६ माघ सुदी १२ चन्द्रवार
कुन्दकुन्दाम्नाये दिल्ली नगरे प्रतिष्ठितं।

११ महावीरजी—प० धा० ५। +७

श्रीवीर संवत् २४४६ वि० १६७६ माघ शुल्का १२ चन्द्रवासरे
कुंदाकुंदाम्नाये दिल्लीनगरे प्रतिष्ठितं।

बड़ा मन्दिर चांवलपट्टी ।

(नं० १ वैसाख लेन कलकत्ता)

वाहिरकी वेदी ।

धातुकी प्रतिमायें ।

चौड़ाई गहराई उंचाई ।

१ सिंहासनपर—स्थित खड्गासन २ प्रतिमायें ४×२=×७।

संवत् १२२३ चैतसुदी ५……स स…न…राय…लसा…
राम प्रतिमा प्रतिष्ठा ।

२ पार्श्वनाथ—पद्मासन ३+११।+५।

संवत् १५१५ वर्षे माघ सुदी १२ सोमे आचार्य श्री कमल
कीर्ति तत् शिष्य आचार्य धर्मश्रिया नित्यं प्रणम्यते मंग-
लार्थं । विशेष—सिंहासनके दोनों तरफ यक्ष यक्षणी, भग-
वान नागयुगलपर विराजमान नागोंके नीचे ६ मुंडे, सामने
देवी ।

३ पद्मासन— २।+१।+३

संवत १५१६ वैशाख सुदी १ श्री भुवनकीर्ति………

४ पार्श्वनाथ—प० २×१=+२॥=

सं० १५३२………

५ पार्श्वनाथ— ३+२+५॥

सं० १५४१ वर्षे ज्येष्ठ वदी ६ वा० बुध श्रीकाष्ठासंघे मथुरा-

न्वये भट्टारक मलयकीर्ति भट्टारक गुणभद्र परम श्र व स ल सा गोत्रे सा० धन्ना पु० वीका ....

६ पार्श्वनाथ—प० २+१+२॥

सं० १५६६ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री विजयकीर्ति ....

७ पार्श्वनाथ—प० १॥।×१।+३॥

सं० १५८६ ....

८ विमलनाथ भगवान—प० २॥+१॥।+२॥।

लिपि है पढ़ी नहीं गई नं० ७ के जैसी है। अनुमानतः १६ वीं शताब्दीकी है।

६ पार्श्वनाथ—प० २+॥+२

सं० १६७२........वैसवेनी प्रणमंति

१० वासुपूज्य—प० ६+६।+१४॥।

सं० १६८८ वर्षे फागुन सुदी ८ शनिवारे श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री क्षेमकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीत्रिभुवनकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीसहस्र कीर्तिनामधेयान् तदाम्नाये साहु मेधाके देहू...की मोठि समस्त पञ्च मिलि श्री वासुपूज्यकी प्रतिमा कारापि(तं) ता आगरे मध्ये श्रीरस्तु मांगल्यं ददातु श्रीसर्वसंघस्य।

११ अभिनंदननाथ—प० ३।+२+४।

सं० १७१२ मिती माघ शुदी ५..........(नं० १३ के सदृश)।

१२ चतुर्मुख—गुमटीमें स्थित पद्मासन १॥+१॥+३।

सं० १७१६ मूलसंघे भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति स० जगसिंहेन प्रतिष्ठापितं । लि० उदयभूषण ।

१३ पार्श्वनाथ—प० २।≈+२।+४॥

सं० १७१८……शुदी १२ मूल संघ सरस्वतीगच्छ भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति ……।

१४—पद्मासन चिह्न रहित २॥+१।+२

सं० १७३२ ।

१५ पार्श्वनाथ— ६+४+७

सं० १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति संघाम्नाये खंडेलवालान्वये गिरिवास* गोत्रे साह देवसी तस्य स्त्री लाडमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० संघही श्री नरहरदास द्वितीय सुखानन्द पुत्राभ्यामियं प्रतिष्ठा सम्मेदपर्वते कारिता ।

१६ चिह्नरहित—प० २॥×१॥≈+३॥

सं० १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्री मूल भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति स० नरहर ।

१७ चिह्नरहित—पद्मासन ३।+१॥+२॥

सं० १७३२ ।

---

* गृद्धवाल ।

१८ चंद्रप्रभु—पद्मासन २।+१।+२॥

सं० १७५६ वैशाख सुदी १२ मूलसंघे वलात्कारगण सरस्वतीगच्छ कुंदकुंदान्वये भट्टारक म० कीर्ति वसतराय प्रणमति।

※१९ धर्मनाथ—खड्गा० ३।+७।

सं० (१७७२ या १७७८ अंदाज) श्री धर्मनाथ जिनवरजी स्याद्वादी ओं ह्रीं ई······नमोस्तु।

२० चौबीसी— २।+१+३॥=

सं० १७८३ वैशाख वदी ८······ह नगरे साह······

२१ आदिनाथ—प० १३+१७॥

श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये भट्टारकजी श्री जिनचंद्रेण विंवप्रतिष्ठा कारापिता श्री सिद्धक्षेत्रजी श्री सोनागिरजी मध्ये माघ शुक्लापञ्चम्यां श्रीगुरुवासरे श्रीवृषभदेवाय नमोस्तु। सदा रक्षा करो सं० १८३७।

२२ चंद्रप्रभु—पद्मा० १०+१४

श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकजी श्रीजिनचंदजी श्रीसिद्धक्षेत्रजी श्रीसोनागिरजी-मध्ये विम्बप्रतिष्ठा कारापिता शशाङ्कजिनोऽयं मिती माघ

※नं० १९ और नं०२२ प्रतिमाएँ पुरानी बाकी की २६ प्रतिमाओंमेंके ऐसी है।

सुदी ५ गुरुवासरे सं० १८३७।

२३ महावीरस्वामी—पद्मा० ७।+४+१२।

श्री वीर नि० सं०……सम्वत् १८४१ माघ शुदी १३ सोमवासरे बद्रीनारायण मोतीलाल गंगवाल कलकत्ता वालेने श्रीसम्मेदशिखरे महावीर जिनेंद्र प्रतिष्ठित कलकत्ते श्रीमन्दिरजीमें दिये।

यह प्रतिमा १८४१ को नहीं है इस प्रतिमाकी प्रतिष्ठा एक इसो संवत् की प्रतिमा खण्डत हो जानेके कारण तीन वर्ष हुए की गई है—पर प्रतिमा पर यह उल्लेख नहीं किया गया है।

२४ अजितनाथ—ख० १।||≈+३॥

सं० १८४५ मिती माघ सुदी ५ भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति।

२५ शांतिनाथ—पद्मा० २॥+१×३।

सं० १९५० फाल्गुन सुदी ७ पावापुर शांतिनाथ।

२६ शांतिनाथ—ख० १।||≈+१॥+७

वीरनिर्वाण संवत् २४४६ माघ सुदी १३ किशोरीलाल पाटनी श्रीशांतिनाथ जिन प्रतिष्ठा श्रीसम्मेद शिखरे प्रतिष्ठितं।

२७ चतुर्मुख—गुमटीमें स्थित प० ३।+३।+५।

सं० १७…वर्षे फाल्गुन सुदी १२ शुक्रे मूलसंघे आचार्य वाहुवलि उपदेशात् खंडेलवाल गोत्रे साहु का ता व-अंबोनी तत्पुत्रेण……

२८ पार्श्वनाथ—पद्मा० १॥+१+२॥

लेखरहित।

२६ पार्श्वनाथ—पद्मा० २।+१।+४।

लेखरहित ।

३० पार्श्वनाथ—पद्मा० ४।+२॥+५।

लेख लुप्त हो गया ।

३१ चौबीसी—पद्मा० ८॥।+२।+१०।

लेखरहित, प्रत्येक तीर्थंकरके नीचे भिन्न भिन्न चिह्न हैं ।

३२ चौबीसी—पद्मा० ६।+२॥+६

लेखरहित

३३ वाहुवलिस्वामी—ख० ३॥।+७॥

लेखरहित ।

पाषाण ।

३४ (१) पार्श्वनाथ—पद्मा० ८॥।+१३।

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्र साह जीवराज पापड़ीवाल नित्यं प्रणमति ।

३५ (२) पार्श्वनाथ—पद्मासन ६॥+१५

सं० १५४८ पूर्ववत् ।

३६ (३) नेमिनाथ—पद्मा० ६॥+८

सं०१५४८ वैशाख शुदी ३ ।

३७ (४) आदिनाथ—पद्मा० ६॥।+८॥

सं० १५४८ वैशाख सुदी ३ ।

३८(५) मुनिसुव्रतनाथ—पद्मा० ६॥×८॥

सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत् ।

३६ (६) पार्श्वनाथ—प० (कृ० पा०) ६॥+६॥

सं० १८२६ वैशाख मास वदी ७ का जीवराज पापड़ीवाला न्वयस्य श्री पार्श्वनाथजीकी प्रतिष्ठा कीनी ।

४०(७) आदिनाथ-नेमिनाथ—ख० ८।+१६

लेख रहित अत्यन्त प्राचीन शिलापट । पाषाणका ही सिंहाशन १०॥+६+४॥ सिंहासन अलहदा है ।

भीतरकी वेदी ।

पाषाण ।

१ पार्श्वनाथ—पद्मासन ८॥+१३।

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारकजी श्री जिनचन्द्र देवाः जीवराज पापड़ीवाल । शहर मुड़ासा । राजा शोसिंह रावल ।

२ पार्श्वनाथ—पद्मा० ५॥+८॥

१५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ इत्यादि पूर्ववत् ।

३पार्श्वनाथ—पद्मा० ८।+१३

१५४८ इत्यादि पूर्ववत् ।

४ पार्श्वनाथ—पद्मा० ६॥+१५

सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

५ पार्श्वनाथ—पद्मा० ५॥+८॥

सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

६ पार्श्वनाथ—पद्मा० १०+१५॥

सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

७ आदिनाथ—पद्मा० १६+२०॥

सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

८ चौबीसी—शिलापटपर पद्मासन १५+२२॥

इत्यादि पूर्ववत्। विशेष—चौबीसों प्रतिमायें अपने अपने चिह्नोंसे भूषित हैं।

९ नेमिनाथ—कृष्ण पाषाण पद्मासन चिह्न अस्पष्ट है। १२+१६ सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत् विशेष—इस प्रतिमाके लेखमें राजा रामसिंहका उल्लेख है।

१० नेमिनाथ—(अनुमानतः)चिह्न घिसा हुआ है। ८॥+१०॥

सं० १६६० वर्षे फाल्गुन वदी ५ पञ्चमी गुरुवासरे श्री-मूलसंघे नंद्याम्नाये भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्तिदेवास्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये भैंसा गोत्रे ... ...

११ प्रतिमा चिह्न रहित ४+६ सं० १७६७ वैशाख वदी १३...

१२ पार्श्वनाथ—७+११ लेखरहित।

१३ प्रतिमा चिह्न और लेखरहित २॥+३॥

१४ शिलापटपर आदिनाथ शांतिनाथ वासुपूज्य खड्गासन ५॥+८॥ ।

१५ चतुर्मुख गुमटीमें श्वेतपाषाण पद्मासन १॥+१×२ अति प्राचीन ।

धातु पद्मासन ।

१ प्रतिमा चिह्न रहित ३॥+४॥ संवत् ६०७.........

२ पार्श्वनाथ—१॥+२॥ श्रीं मूलसंघे श्री भुवनकीर्तिदेव सं१२३४ ।

३ पार्श्वनाथ—१॥+२॥ श्री मूलसंघे भुवनकीर्त्युपदेशात् १२३४ ।

४—चिह्न रहित २॥+३। संवत् १४०३ माघ सुदी......

५—प्रतिमा चिह्नरहित २+२॥ सं० १४१४ वैशाख सुदी ५ श्री-काष्ठासंघे ....

६ अनन्तनाथ—३।+५ सं० १४४८ मिती माघ शुल्का ८ मङ्गलको पटनेमें प्रतिष्ठा कराई......

७ पार्श्वनाथ—२॥+३॥ संवत् १४५८ ज्येष्ठ सुदी ६ सोमे...

८—तीन खड्गासन २॥+४। संवत् १४७१ फाल्गुन सुदी ३ श्री मूलसंघे श्रीपद्मनन्दिदेवाः जैसवालान्वये साहु (दैत्रुं) भार्या धन सिद्धि पुत्र शिवब्रह्म हितकर......

९—तीन खड्गासन एक साथ १।+२ संवत् १५०२ वैशाख सुदी......

१० पार्श्वनाथ—१।+२ सं० १५०७ वैशाख सुदी ६ बुधवार ।

११ चौबीसी—३॥+६ संवत् १५२२ माघ सुदी १२ बुध श्री-
मूलसंघे भट्टारक सिंहकीर्ति देवा स्तदाम्नाये पाटनदेश
जिनदत्त··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

१२ चौबीसी—३॥+६॥ सं० १५२७ वर्षे माघ वदी ··श्रीमूल
संघे भट्टारक श्रीसिंहकीर्तिःतदाम्नाये श्रीलाल ··· ···

१३ चौबीसी—४॥+७॥ सं० १५२८ आषाढ़ वदी ५ शुक्र···

१४ विमलनाथ—२॥+३। सं० १५३७ वैशाख सुदी १०···

१५ पार्श्वनाथ—२।+२। संवत् १५४२ माघ सुदी १२ मूल
संघे श्रीसिंहनन्दी··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

१६ पार्श्वनाथ—१॥+२ सं० १५५२ जेठ सुदी ११ ··· ···

१७—चिह्नरहित १॥+१॥ सं० १५७२ ···········

१८ पार्श्वनाथ—१॥+३ सं० १५६२ वर्षे माघ वदी २
बुधे ··················

१९—चिह्नरहित १॥+२ सं० १६०१ ······शु० ६ मूलसंघ ······

२० पार्श्वनाथ—१॥+२ सं० १६५५ ।

२१ नमिनाथ—२+३॥ नमिनाथ सं० १७०० वर्षे फाल्गुन
सुदी १२ शुभकाष्ठासंघे माथुरगणे नन्दीतटगणे लोहा
चार्यान्वये भट्टारक श्रीशुभकीर्त्युपदेशात् अग्रवाला ज्ञातीय

गोयलगोत्रे सा० सेद्राज भार्या ...... वाराणसी काशी।

२२ पार्श्वनाथ— १।+२॥ सं० १७०२ मूल संघ।

२३ शांतिनाथ— (अनुमानतः) २॥।+३॥। सं० १७०३ श्रीमूल संघे भट्टारक महीचन्द्र सं० मनजी माघ वदी ५...७

२४ पार्श्वनाथ— ३॥+२॥।+५ सं० १७१८ फाल्गुन सुदी १२ बुध श्री मूलसंघे ... ...

२५ पार्श्वनाथ—३॥×२॥+५ सं० १७१८ वर्षे फाल्गुन सुदी १२ मूलसंघे सरस्वतीगच्छे ... ...

२६ पार्श्वनाथ—३॥÷२॥+५। सं० १३७२ ज्येष्ठ सुदी २ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये संघही श्री नरहरदासेन इयं प्रतिष्ठा कारिता सम्मेदगिरौ।

२७ चिह्नरहित— २॥।+२+३॥। सं० १७३२ ज्येष्ठ सुदी २

२८ चिह्नरहित— १॥×२ सं० १७३२

२९ शांतिनाथ—४+५॥। श्री शांतिजिनबिंबं प्रतिष्ठितं श्री कर्पूरप्रियगणी संवत् १७८० माघ सुदी ५।

३० पार्श्वनाथ—॥।+१॥ सम्वत् १८१४

३१ पार्श्वनाथ—१०+१६ श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदचार्यान्वये भट्टारकजी श्री जिनचन्द्रेण श्री सिद्ध क्षेत्रतीर्थ श्री सोनागिरिजीमध्ये बिम्बप्रतिष्ठा कारापिता

माघ सुदी पञ्चम्यां सं० १८३७ ।

३२ पार्श्वनाथ—३॥+४॥। पारसनाथजी का लक्षण सर्प सं० १८५३ ।

३३ सिद्धभगवान —४।+५॥ सं० १९५० फागुन सुदी ७ पावापुरी कलकत्ता ।

३४ प्रतिमा— लेख अस्पष्ट है । २॥+१॥+४

३५ पार्श्वनाथ—१।+२॥ लेखरहित

३६ मल्लिनाथ—२।+२॥ लेख अस्पष्ट है ।

३७ पार्श्वनाथ—२।+२+४ " मूलसंघ ··· (अन्दाज ५०० वर्षकी पुरानी)

३८ पार्श्वनाथ—१॥+१≈+ ३। लेख अस्पस्ट है ।

३९ पार्श्वनाथ—१॥≈+२। ············खण्डेलवाल काशलीवाल ··············

४० चौबीसी—३॥+३। श्री काष्टासंघाम्नाये आचार्य श्री कमलकीर्ति अग्रोतकान्वये सा० वेणीसाह विजयसिंह पुत्र, हौली साह श्रीसिंह पू०·········(यह प्रतिमा चौवीसीके वीचकी है । अगल वगलकी २३ प्रतिमाओंका पट खो गया है ।

४१ शांतिनाथ—ताम्रपत्र १।=+२ लेखरहित अति प्राचीन ।

४२ पार्श्वनाथ—१॥+२॥ लेख रहित ।

४३ पार्श्वनाथ—॥।≈+१। संवत् १८१४ लेखरहित।

४४ पार्श्वनाथ —॥।≈×१। लेखरहित।

४५ पार्श्वनाथ—॥।≈+१।≈ लेखरहित।

४६ पार्श्वनाथ—चांदी १।+१॥≈ श्री मू० स० व०

४७ पार्श्वनाथ—१+१॥ लेखरहित।

४८ पार्श्वनाथ—१।×१।≈ लेखरहित।

४९ पार्श्वनाथ—॥।+१॥ अस्पष्ट।

५० लेख और चिह्न रहित —१॥÷१॥

५१ पार्श्वनाथ—१+२ अस्पष्ट।

५२ चन्द्रप्रभु—स्फटिक २॥।+३। लेख रहित।

चूंचुड़ा (हुगली)।

श्वेत पाषाण पद्मासन।

१ महावीरस्वामी—१७+२७ विशेष—अति प्राचीन लेख रहित इसके अगल बगलमें चमरेन्द्र, ऊपर तीन छत्र, जिनमें दो छत्रोंको आकाशमें स्थित देव पकड़े हुए हैं। नीचे सिंहासन अगल बगल दो बैठे देव, सिंहासनके ठीक नीचे चक्र और चक्रके अगल बगल दो सिंह, मूर्ति के पीछे भामंडल। काला पाषाण।

२ महावीरस्वामी—६।+७॥ संवत् १५३३ वर्षे वैशाख

सुदी ३ अज कीरतजी साजी श्री जीवराज पापड़ीवाल राजा शोसिंह शहर मुड़ासा।

३ चन्द्रप्रभु—५॥+७। संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारकजी श्री जिनचंद्र देव साह जीवराज पापड़ीवाल नित्यं प्रणमति। श्रीराजाजी शोसिंहजी रावल शहर मुड़ासा।

४ चन्द्रप्रभु—५।+७। सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववतु।

५ पार्श्वनाथ६+६। संवत् १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

६ पार्श्वनाथ—६॥+१० सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

७ शांतिनाथ—११॥+१४॥ सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

८ पार्श्वनाथ—८+११। सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

९ पद्मावती सहित पार्श्वनाथ ८+१७ सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

१० पार्श्वनाथ—८+१२। सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

११—शिलापट पर वीचमें पद्मावती सहित पार्श्वनाथ। अगल वगल खड्गासन मूर्तियां। कलश सहित :२ हस्ती सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत् ८॥+११॥।

१२ चंद्रप्रभु—७॥+६। सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

१३ पार्श्वनाथ—१०+१४ सं० १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

१४ शिलापट ८॥+१३॥ बीचमें खड्गासन पार्श्वनाथ। मस्तक

पर छत्र ऊपर दो कलश सहित हस्ती दो चमरेन्द्र बैठे हुए। अगल बगलमें तीन तीन पद्मासन मूर्तियां धर्मनाथ चन्द्रप्रभु नेमिनाथ अरनाथ सुपार्श्वनाथ शांतिनाथ। पृष्ट भागपर लेख पूर्ववत्।

बेलगाछिया।

२६ नं० बेलगाछिया रोड।

१ **पार्श्वनाथ**—पद्मा० श्वे० पा० ३८+२३ संवत् १८७८ मिति फाल्गुन शुल्का ३ रविवार श्री सम्मेद शिखरजीके नीचे मधुवनमें गुलालचंद ( ) सवाल गोत्रोकी वहू सहजके वरनें श्री प्रतिष्ठा जी किया।

२ **पार्श्वनाथ**—पद्मा० ६॥+४ धातु सं०१८७८ फाल्गुम शु० ३ रवि दिन प्रतिष्ठा सम्मेद शिखर मधुवनमें हुलासीलाल अग्रवालेने।

उत्तरपाड़ा.

पद्मासन।

१ **अरहनाथ** —१२॥+१० श्वे०पा० सं१५४८ वर्षे वैशाख सुदी ६ श्री मूलसंघे..........श्री जिनचन्द्र देवा साह जीवराज पापड़ीवाल..............

२ **चन्द्रप्रभुस्वामी**—श्वेत पा० १५+१२॥ ओं श्री शुभ संवत् १६३८ मार्ग शीर्ष शु० २ बुधवासरे काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्याम्नाय भट्टारक राजेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये

दशानन्द सिंह पुराज्ञातीय श्रीविंया वाई वाजकीर शुभचन्द्र महा-राज······ प्रतिष्ठा कारापिता।

३ सिद्धमहाराज—धातु ६+४। सं० १९५० फाल्गुन सुदी ७ पावापुरी भट्टारक (नौसते) प्रभूषण·········

४ शांतिनाथ—धातु ३॥+२॥ संवत् १९५५ माघ शुक्ला १२ प्रतिष्ठितं उत्तर पाड़ा लखमी चन्द······

५ पार्श्वनाथ—धातु १२॥+७ सं० १९५५ माघ शुल्का १२ दिगंवराम्नाये प्रतिष्ठितं हाथरस धनपतिराय कलकत्ता उत्तरपाड़ा।

श्रीपुरानी बाड़ी।

३५ नं० ब्रजदुलाल ष्ट्रीट (ढाका पट्टी के पास)

१—एक पटथर तीन खड्गासन प्रतिमा धातु २।×१॥ संवत् १५०३······प······संघ······

२ पार्श्वनाथ—पद्मा० धातु ३॥+२। सं० १५१४·····प्रटरू वरसा प्रणमति।

३ पार्श्वनाथ—पद्मा० श्वे० पाषाण ११॥+७ सं १५४८ का वैशाख सुदी ३ भट्टारक·····साहु नरहरदास पापड़ीवाल······

४ महावीरजी—पद्मा० श्वे० पा० ८॥+६॥ सं० १५४८ का वैशाख सुदी ३ भट्टारक इत्यादि पूर्ववत्।

५. चंद्रप्रभु—पद्मा० श्वे० पा० १॥+३॥ संवत् १५४८ इत्यादि पूर्ववत्।

६-२९—चौबीस महाराजोंकी चौबीस प्रतिमायें धातु की हैं। चौबीसों प्रतिमाओंमें आदिनाथ वासुपूज्य और नेमिनाथ ये तीन प्रतिमायें तो पद्मासन हैं और इनकी अवगाहना ६।+३॥ है शेष सब खड्गासन हैं। और उनकी अवगाहना ६×४॥ है. चौबीसों महाराजोंके चिह्न बड़ी मनोहरता और प्राकृतिक शोभाको लिये हैं।

३० —भरत चक्रवर्ती ७+३॥ खड्गासन धातु

३१ बाहुबलि—८+३॥ खड्गासन धातु

उपर्युक्त ६ नम्बरसे ३१ नम्बर तककी प्रतिमाओंपर लेख निम्न प्रकार है—संवत् १७३८ वर्षे मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी रविवार मूलसंघे भट्टारक जगत्कीर्तिस्तदाम्नाये भट्टारक देवेंद्रकीर्तिराम्नाये खंडेलवालवंशे अजमेराजाती साहु तेजपाल तत्पुत्र साह सुन्दरदास तत्पुत्र साह अजयराज स्वपुत्रेण सुंदरदासेन प्रतिमास्त्वविधानकारिता भट्टारक श्री धवलकीर्तिना। इत्तं। नमोऽस्तु*

३२ पार्श्वनाथ—पद्मा० धातु १६॥+१० (सिंहासनसहित) श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाम्नाये श्री भट्टारकजी श्रीजिनचन्द्र देवाः श्रीसिद्धक्षेत्र सोनागिरिजी मध्ये

---

*वासुपूज्य की प्रतिमा पर धवल कीर्तिकी जगह अचल कीर्ति और चन्द्र प्रभु की प्रतिमापर एक जगह अचल दास पढ़ा गया।

विंबप्रतिष्ठा कारापितं माघ सुदी पंचम्यां गुरूवासरे सं० १८३७

३३ (?)—कमलपर पद्मा० हाथमें फल कु० पा० ३॥+२॥ लेखरहित ।

३४ चन्द्रप्रभु—पद्मा० स्फटिक ३॥+३ लेखरहित ।

३५ पार्श्वनाथ—पद्मा० (कुछ पीले रङ्गका) पाषाण १॥+॥ प्राचीन होनेसे मुख आदिकी आकृति स्पष्ट नहीं । लेखरहित ।

३६ पार्श्वनाथ—पद्मा० धातु २॥+१॥≈ लेखरहित ।

३७-३९—तीन चौकोर धातुपत्र २+१॥≈

१—शीतलनाथ पद्मासन ।

२—पद्मा० चूहेका चिह्न ।

३—अजितनाथ पद्मा० हाथीका चिह्न विशेष प्राचीन नहीं ।

बाली जैन मन्दिर ।

सर्व पद्मासन ।

१ —मुनि सुव्रतनाथ धातु ४।×३ सं० १५३१ फागुन सुदी ५ गुरौ श्री मूलसंघे श्रीसिंहकीर्ति गोलरारा संघनु भा० ललो पु० वसु भा जीवापुत्र देवदास ।

२ पार्श्वनाथ—श्वे० पा० १०×८ सं १५४९ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारकजी श्रीजिनचन्द्र देवा साह जीवराज

पापड़ीवाल नित्यं प्रणमति। श्री राजाजी श्योसिंह रावल शहर मुड़ासा।

३ पार्श्वनाथ—श्वे० पा० १२×८ संवत् १५४८ वर्षे इत्यादि पूर्ववत्।

४ पार्श्वनाथ—श्वे० पा० १३॥×८ सं० १५४६ वर्षे इत्यादि पूर्ववत्।

५ पार्श्वनाथ श्वे० पा० ३×८ सं० १५४६ वर्षे इत्यादि पूर्ववत्।

६ पार्श्वनाथ—पद्मावतीके मस्तक पर पीछेकी ओर शिला पट है। पद्मा० ११×६॥ सं० १५४६ इत्यादि पूर्ववत्।

७ पार्श्वनाथ—श्वे० पा० १४×६ सं० १५४६ इत्यादि

८ —शिलापट श्वेत पा० ११॥×६ बीचमें विमलनाथ पद्मा० मस्तक पर दो हस्ती कलशा ढोर रहे हैं। बायीं और दाहीं ओर एक एक प्रतिमा खड्गासन उनपर एक एक पद्मासन सं० १५४६ इत्यादि पूर्ववत्।

९ पार्श्वनाथ—पद्मा० कृ० पा० २५+१५॥ सम्वत् १५४९ इत्यादि पूर्ववत्।

१० पार्श्वनाथ—कृ० पाषाण १५॥×१०॥ सम्वत् १५६५ वर्षे······ प्रवर्तमान माघ मासे शुल्क पक्षे ५ तिथौ गुरुवासरे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्तिदेवा...

११ **चन्द्रप्रभु**—श्वे० पा० ५॥×५ सम्वत् १८५६ वर्षे वैशाख सुदी ३…पादा गोत्रीय विमना साह चन्द्रप्रभु विम्बम् कारितं… सकल ………(विसन चन्द्र)

१२ **चन्द्रप्रभु**—श्वे० पा० १५॥×१०॥

श्रीमहावीर सं० २४३३ विक्रम सं० १९६४ द्वुः चैत्र शुक्ला ६ चन्द्रवार मूलसंघ कुंदकुंदाम्नाये कानपुर नगरे प्रतिष्ठता विंबं चिरं जीयात् ।

(मानो बाई का) गृह चैत्यालय ।

(नं० ७ हरीप्रशाद दे लेन ढाका पट्टी)

१ **चंद्रप्रभु**—पद्म० श्वे० १२ अँगुल अंदाज सम्वत् १५३३ वर्षे वैशाख सुदी ३ अज कीरतजी साहजी श्री जीवराज पापड़ी वाल राजा शोसघ शहर मुड़ासा ।

❀१ **पद्मप्रभु**—पद्मासन-श्वेत पाषाण अंदाज ८। १० अंगुल अवगाहना सम्वत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे, भट्टारक श्री जिनचन्द देवा साह जीवराज पापड़ीवाल श्रीराजा सोसिंह रावल शहर मुड़ासा ।

❀२ **पार्श्वनाथ**—प० श्वे पा० अवगाहना ८ अंगुल अंदाज सम्वत् १५५०…… ……सोमवार……

❀ उपरोक्त दो प्रतिमायें हुगलीके मन्दिरसे चोरी हो गई थी सो अब वे पुनः प्राप्त हो गई हैं—ये प्रतिमायें अब बड़े मन्दिरजी में हैं ।

यन्त्र-विभाग.

———)※(———

वाली जैन मन्दिरजी.

१ षोडश कारण यंत्र—७॥ इंची व्यास

संवत् १७३२ वर्षे जेठ सुदी २ श्री मूलसंघे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति-स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गृद्धवालगोत्रे साहु श्री देवसी तस्य स्त्री लाडमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र संघवी श्री नरहरदास द्वितीय सुखानन्दाभ्यामियं प्रतिष्ठा सम्मेद गिरौ कारिता ।

२ सम्यग्दर्शन यंत्र—४॥ संवत् १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्रीमत्काष्ठा संघे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्ति.........

३ सम्यग्दर्शन यंत्र—३॥....................

श्रीपुरानीवाड़ी.

१ दशधर्म यंत्र—४॥ संवत् १६५६ माघ सुदी १४ मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये...

२ षोडश कारण यंत्र—७॥ संवत् १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ८ श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेल-वालान्वये गृध्रवालगोत्रे साह देवसी तस्य भार्या लाड़मदे तयोः

पुत्रौ संघ ही श्रीनरहरदास सुखानन्दाभ्यां सम्मेदगिरौ प्रतिष्ठा कारापिता ।

३ सम्यग्दर्शन यंत्र—३॥ पूर्ववत् ।

४ सम्यग्दर्शन यंत्र—५॥ पूर्ववत् । (२)

५ सम्यग्दर्शन यंत्र—४ संवत् १७३२ वर्षे मार्गशीर्ष वदी अष्टमी काष्ठासंघे भट्टारक रूपचन्द्र प्रतिष्ठित अग्रवाल साह गुदलालदास भार्या धरणदे इत्यादि यन्त्र प्रतिष्ठा पञ्चगुरौ भतीजा लोकमणि साहाय्यात् । (१)

६ सम्यग्दर्शनयंत्र—४। सं० १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २···

७ सम्यक् चारित्र यंत्र—चौकोर५ ॥+५॥ सं० १७३२ वर्षे मार्गशीर्षवदी ५ गुरौ श्रीकाष्ठासंघे भट्टारक श्री गुणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक सकल चन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक मुनिचंद देवास्तत्पदे भट्टारक श्रीधर्मचन्ददेवास्तत्पट्टे भट्टारकः श्री रूपचन्द्र प्रतिष्ठितम् । अत्र वा—गांगलगोत्रे साह गुलाल दास भार्या धरणदे तयो पुत्र सवलसिंह वा अमरसिंह वा केसरसिंहादिभि यन्त्र प्रतिष्ठा कारापिता ढाकामध्ये अमरोहा वास्तव्ये ततः मेर पुरस्य सतां जनयतुसुलक्षद्धी ।

८ षोडशकारण यंत्र—५ संवत् (१७) ३८ वर्षे श्रीमूलसंघे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीज्ञान भूषण गुरूपदेशात्···········

बड़ामन्दिरजी चावलपट्टी।

१ दशधर्म यंत्र—७ संवत् १५८६ माघ सुदी ६ बुधे श्रीमूलसंघे आचार्य श्रीरत्नकीर्ति शिष्य मुनि श्री ललितकीर्ति गुरूपदेशात् बाई अमरी नित्यं प्रणमति।

२ दशलक्षणधर्म यंत्र—४ सम्वत् १६१२ वर्षे भाद्र...सुदी १३ दिने ...त वासरे श्रीमूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे ...वदआ मानाये ततः भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्ति......

३—अस्पष्ट ३॥+३॥ सं० १६१२।

४ —५।+५। संवत् १६३४ भाद्रशुल्का १५ इत्यादि पूर्ववत्।

५ सम्यक् चारित्र यंत्र—६+६ सं० १६३४ इत्यादि पू०।

६ चिन्तामणि यंत्र—११॥ सं० १६४१ का श्री......ज ५ बु० मूलसंघे श्रीबाहुनन्दी उपदेशात् ते...भा...ओसवालान्वये सा० ग...शु जाधरतः वपु पु......लक्ष्मीने...एतेषां मध्ये लक्ष्मी दासेन पुरसोनियाग्रामे चिन्तामणिनाम यंत्र प० वस्तुपालेन प्रतिष्ठिते अकबर राज्ये।

७ षोडश कारण यंत्र—६ सं० १६६९ भाद्रमासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी शुक्रवासरे मू० सं० ब० कुंदकुंदाम्नाये देवेन्द्रकीर्ति देव..........

८ दशधर्म यंत्र—५॥ सं० १६६९ देवेन्द्रकीर्ति देव......

९ सम्यग्ज्ञान यंत्र—५।+५। संवत् १६३४ भाद्र शुक्ल १५ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्रीधर्मकीर्तिस्तस्याम्नाये भट्टारक श्री धर्मचन्द्रतच्छिष्य मुनि श्री साधु बाहुनन्दी तस्योपदेशात् विहारमण्डले जैसवालान्वये इदं यंत्रं श्रीसंघेन कारापितं रत्नत्रयव्रतोद्यापनाय यंत्रं कारापितं बुधवासरे धर्मोपदेशात् पं० देवदत्तेन लिखितं ब्राह्मणान्वये पं० कपुर जैसवालान्वये संह्युतं।

१० दशधर्म यंत्र—६ सं० १६७२ वर्षे भाद्र वासितात् १३ दिन'''न वासरे मूलसंघे सरस्वतीगच्छे तदाम्नाये श्री भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवाः''''''ग्वला गोत्रे साहु रायमल'''''कलाः।

११ सम्यक् चारित्रयंत्र—६ श्रीसंवत् १६७५ वर्षे फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे तृतीयायां तिथौ कुंदाम्नाये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे श्री ज्ञानचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री''''''

१२ सम्यग्ज्ञान यंत्र—५॥ सं० १६७५ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्ण पक्षे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री चन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति स्तदाम्नामे खंडेलवालान्वये गंगवालगोत्रे साह फलहु तत्पुत्र''''''सांग (ही) दास प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं।

१३ दशधर्म यंत्र—५॥ सं० १६७५ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्ण

पक्षे श्रीमूलसंघे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिजीराम्नाये खंडेलवालान्वये पाटनीगोत्रे साह चतुरपाल भार्या कवजदे तत्पुत्र सोटा तत्पुत्र टीकासा··· संगहीदास प्रतिष्ठास्य··········

१४ सम्यग्दर्शन यंत्र—५॥। सं० १६७५ वर्षे फाल्गुन वदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री प्रभाचन्ददेवास्तत्पट्टे श्रीचन्द्रकीर्ति-देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गंगवालगोत्रे फूलह तत्पुत्र नाथू···········

१५ सम्यग्दर्शन यंत्र—५॥ संवत् १६७६ माघ सुदी ३ मूलसंघ्र भट्टारक चन्द्रकीर्ति देवेन्द्रकीर्त्युपदेशात् अग्रवाल सा० सावल प्रतिष्ठायां चाटुवाडुगोत्रे हर्षकीर्ति········

१६ सम्यक् चारित्र यंत्र—६॥॥ सं० १६७६ माह सुदी ३ मूलसंघे वलात्कारे भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्र-चन्द्कीर्ति-देवेन्द्रकी-र्त्युपदेशात् अगरवाला मुंगिलगोत्रे स० भैरव पु० छीतर पु० प्रतना ई···स···र···स० सावल सम्मेदं प्रणमति।

१७ दशधर्म यंत्र—५। संवत् १६७६ माघ सुदी १३ मूलसंघे वलात्कारे भट्टारक प्रभाचन्द्र चन्द्रंकीर्ति देवेन्द्रकीर्त्युपदेशात् अग्र-वाल मुंगिल भैरव पु० छीतर पु० प्रतना···ई···स···रस सावल प्रणमति।

१८ सम्यग्ज्ञान यंत्र—५ सं० १६७६ माघ सुदी १३ मूल-

संघे भट्टारक चन्द्रकीर्ति देवेन्द्रकीर्त्युपदेशात् सं० सावल प्रतिष्ठायां चाड़वाड़ गोत्रे सा पृथिवी प्रण लि० हर्षकीर्ति।

१६ दशधर्म यंत्र—५॥ सं० १६७६ माघ सुदी १३ मूलसंघेन चन्द्रकीर्ति भ० देवेन्द्रकीर्त्युपदेशात् अग्रवाल मुंगिल-गोत्रे सं० सावल प्रतिष्ठायां चाडवाड़ गोत्रे पृथिवी प्रणमति लि० हर्ष कार्तिनाचार्येण सम्मेदे।

२० सिद्धपरमेष्ठी यंत्र—४॥ सं० १६ (६४) कार्तिक सुदी १३ देवेन्द्र कीर्ति चारित्र भूषण........

२१ कलिकुंड यंत्र—७। सं० १६६७ वर्षे अगहन सुदी ११ शुक्र मू० स० व० कुंदकुंदाम्नाये बाहुवलि उपदेशात् खंडेलवाल ज्ञातीय भैंसागोत्रे साहकपुरा............

२२ पंच परमेष्टी तथा चौबीस महाराज यंत्र—
१० सं० १६६७ वर्षे अगहन सुदी ११ शुक्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये आचार्य श्री बाहुवलि गुरूपदेशात् खंडेलवालान्वये (वंदु) श्रीगोत्रे साह भीवु साह भाग्यनस्य साह.....भूरा.....नित्यं.....

२३ सम्यग्ज्ञान यंत्र—५ सं० १६६७ वर्षे अगहन सुदी ११ शु० मू० स० व० कं० आ० बाहुवलि उपदेशात् खंडेलज्ञाति साहतेजा भार्या कोयलदे तयो पुत्र सा...जन। भा० नाथी तस्याः पुत्र जगनाथ भा० अपादे...नित्य प्रणमति।

२४ सम्यग्ज्ञान यंत्र—५॥ सं० १७१८।

२५ दशधर्म यंत्र—५॥ सं० १७१८ ।

२६ सम्यग्दर्शनयंत्र—५। सं० १७१८।

२७ पंच परमेष्ठी यंत्र—४॥ संवत् १७२६ फाल्गुन सुदी ६ शनिवार श्रीमूलसंघे भ० सुरेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सा० देवसी तत्पुत्र सुखानन्द विम्बप्रतिष्ठा कारापिता सम्मेदशिखरमध्ये ।

२८ सम्यक् चारित्र यंत्र-५॥ सं० १७३१ मूलसंघाम्नाये माथुरगच्छे लोहाचार्यान्वये पुष्कर गणे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिआम्नाये पद्मावतीपुरवाल ज्ञातीय सिंह गोत्रे सा० उग्रसेन भार्या वाई......

२६ सम्यक् चारित्र यंत्र—७। सं० १७३१ वर्षे वैशाख सुदी १० सोमवार श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ज्ञानभूषणस्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगद्भूषणस्तत्पट्टे भट्टारक श्री विश्वभूषणस्तदाम्नाये गोलसिंगारान्वये चदौडिसगोत्रे साह धारापत स्त्री पूरणदे तयोः पुत्र साह वाबूराई तस्य स्त्री मथुरा तयोः पुत्र वंशीधर तस्य स्त्री धर्मवती एतेषां मध्ये मथुरा यंत्रं कारापितं सम्मेदशिखर मध्ये स० खेमचन्द्र प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं आचार्य श्री ललितकीर्ति उपदेशात् ।

३० सम्यक् चारित्र यंत्र—४। सं० १७३२ मागसिर

वदी ५ गुरौ भट्टारक रूपचन्द्र प्रतिष्ठितं अग्रवाल साह गुलाल-दास भार्या घोरणदे यंत्र प्रतिष्ठा।

३१ सम्यग्ज्ञान यंत्र—४॥ सं० १७३२ ज्येष्ठ सुदी २ काष्ठा संघे भट्टारक गुरु पद्मोपदेशात् भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिना प्रतिष्ठा कारापिता।

३२ पंच परमेष्टी यंत्र—४। सं० १७३२ ज्येष्ठ सुदी २ काष्ठासंघ भट्टारक रूपचंद्र प्रतिष्ठितं।

३३ पंच परमेष्टी यंत्र—१०। सं० १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंद-कुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री-सुरेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गृध्रवालगोत्रे साह देवसी तस्य स्त्री लाड़मदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र संघही श्री नरहर दास, संव ही सुखानन्दाभ्यामिदं प्रतिष्ठा सम्मेदगिरौ कारिता। पण्डित जगद्रूपेण इदं यंत्रमलेखि।

३४ गणधरवलय यंत्र—१०॥ सं० १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ रवौ इत्यादि पूर्ववत्।

३५ शांतिनाथ यंत्र—१०॥ सं० १७३२ वर्षे जेठ सुदी २ रविवारे मृगशिर सम्मेद गिरौ पतिसाह अवरंग साहि राज्ये भूमिपति राजा श्री फतेसिंह राज्ये प्रवर्त्तमाने श्रीमूल-संघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदा-चार्यान्वये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्र-

कीर्ति स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गृध्रवालगोत्रे साह श्रीवीतर तस्य स्त्री वायलदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र साह नाथू द्वितीय पुत्र साह सोनपाल प्रथम पुत्र साहनाथू तस्य स्त्री नौलादे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र साह देवसी द्वितीय पुत्र साह खेमचन्द्र तृतीय पुत्र साह चतरा प्रथम पुत्र साह देवसी तस्य स्त्री लाड़मदे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम पुत्र साह विहारीदास तस्य स्त्री बहुरंगदे तयोः पुत्र वि (ज) यराम साह देवसी द्वितीय पुत्र संघ ही नरहर दास तस्य स्त्रियौ द्वे प्रथम स्त्री नवरंग दे तयोः पुत्र चिरंजीव दीप चन्द्र द्वितीय स्त्री चौसरदे साह देवसी तृतीय पुत्र सं० सुखानंद तस्य स्त्री हरखमदे तयोः पुत्राः पंच प्रथमपुत्र चिरंजीव घासीराम तस्य स्त्री धरमदे द्वितीय पुत्र राइचंद्र तृतीय पुत्र निहालचन्द्र चतुर्थ पुत्र खुरपाल चन्द्र पंचमपुत्र गुलालचन्द्र, साह नाथू तृतीय पुत्र साह चतरा तस्य स्त्री चतुरंगदे तयोः पुत्र खरवैराज तस्य स्त्री अहंकारदे वीतरस्य द्वितीय पुत्र साह सोनपाल तस्य स्त्री सुद्धमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र साह हेमराज तस्थ स्त्री हमारदे द्वितीय पुत्र साह हीरा तस्य स्त्री हीरा दे एतेषां मध्ये संघ ही श्री नरहरदास तेनेयं प्रतिष्ठा कारिता आत्मकर्म निवारण निमित्त शुभं भवतु। पं० जगद्रूपेणाऽलेखि।

३६ सम्यग्दर्शन यंत्र—३॥ संवत् १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २.........

३७ सम्यग्दर्शन यंत्र—४॥ स० १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये

गृध्रवाल गोत्रे संग ही श्री नरहरदास सुखानन्दाभ्यामियं प्रतिष्ठा कारिता। पाटनीगोत्रे साह देवसीमल तस्य स्त्रियौ द्वे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र साह गिरधर सावलदास सुन्दर साहगिरधर तस्य स्त्रियौ द्वे तयोः पुत्राः पञ्च प्रथम पुत्र साह हीरा तिलोकसी सामदास रायचन्द...द्वितीय पुत्र सांवलदास तस्य स्त्री स्वरूपदे प्रथम पुत्र नानिग भोपति तृतीय पुत्र सुन्दर तत्पुत्र दयाल एतेषां मध्ये सांवलदास तिलोकसी कारापिता।

३८ नौमंत्रोंका यंत्र—४॥ सं० १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्रीमूलसंघे भ० सुरेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये ख० मू० सं० नरहरदास सुखानन्दाभ्यां सम्मेदगिरौ प्रतिष्ठा कारिता।

३९ चौकोर यंत्र—४।+४ त्रैकाल्यं द्रव्यषट्क नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः पंचान्ये चास्तिकायाः व्रतसमितिगतिज्ञान चारित्रभेदाः। इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्ध दृष्टिः॥ १ ॥ सं० १७३२ वर्षे श्रीमूलसंघे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गृध्रवालगोत्रे साह देवसी तत्पुत्र सं० नरहरदाससुखानन्दाभ्यां प्रतिष्ठा कारिता सम्मेदगिरौ। कल्याणमस्तु।

४० षोडश कारण यंत्र—५॥+५॥ सं० १७३२ वर्षे मार्गशीर्ष वदी ५ गुरौ श्रीमत्काष्ठासंघे भट्टारक गुणचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक सकल चन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक मुनिचन्द्रदेवास्तत्पट्टे

भट्टारक धर्मचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक रूपचन्द्रदेवेन प्रतिष्ठितं। अग्रवालान्वये गांगलगोत्रे साहुलालदास भार्या घूरणदे तयोः पुत्र... ... ...

४१ पंच परमेष्ठी यंत्र—३॥ सं० १७४६ माघ सुदी ६ मूलसंघे भट्टारक श्री जगत्कीर्तिस्तदाम्नाये वघेरवाल श्री कुल-दासेन प्रतिष्ठा कारापिता।

४२ षोडश कारण यंत्र—६ सं० १७७७ वर्षे फा० सु० पञ्चम्यां सोमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे पूज्य श्री जगत्कीर्ति स्तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये.........

४३ ऋषि मण्डल यंत्र—१४+१४

४४ यंत्र —३॥। अस्पष्ट

४५ सिद्धचक्र यंत्र—८॥।≠।

४६ पंच परमेष्ठी यंत्र—६......

४७ महालक्ष्मी यंत्र—५+४॥। संवत् आदि नहीं है।

४८ षोडशकारण यंत्र—५॥ संवत् आदि नहीं है।

परिशिष्ठ.

इस पुस्तकमें १६३ प्रतिमायें तथा ५६ यंत्रोंका वर्णन है जिन में संवत् १५४८ की मूर्त्तियां ३८; सं० १७७८ की २७; सं० १५४६ की ६; सं० १७३२ की ७; सं० १८३७ की ४; सँ० १७१८ की ३; सं० १२३४, १५३२, १५३३, १५८६, १८१४, १८७८, १६५०, १६५५ और १६७६ की २।२ वाकी सव १।१ हैं।

नोट-संवत् १५४८ और सं० १५४६ -दोनोंमें वैसाख सुदी ३ और भट्टारक जिनचन्द, तथा साह जीवराज आदिका उल्लेख हैं अतएव इन सम्वतोंमें कौन सा ठीक है यह गणना नहीं किया गया है तथापि सम्वत् १५४८ ही ठीक प्रतीत होता है। लेखक की गलती से सम्भवतः १५४ (६) लिखा गया है।

· संवत् १७३२ के यंत्र १६; सं० १६७६ के ५, सं० १६७५ के ४, सं० १६६७ और १७१८ के ३।३; सं० १६१२, १६६६ और १७३१ के २।२ वाकी सव १।१ हैं।

यों तो २४ तीर्थंकर, सिद्ध भगवान, चौवीसी भरतचक्रवर्त्ती, वाहुवलि, पद्मावतीं सहित पार्श्वनाथ जी तथा चतुर्मुख प्रतिमायें हैं पर विशेप मूर्त्तियां इस प्रकार हैं:—

पार्श्वनाथजी की ७४, चन्द्रप्रभुजी की १६, चौवीसी की ६; शांतिनाथजीकी ७, महावीरस्वामी की ६, नेमिनाथजी की ६, आदिनाथजी की ५, सिद्ध भगवान, विमलनाथजी, मुनि सुव्रतनाथजी, की ३।३; अरनाथजी, पद्मप्रभुजी वाहुवलिजीकी २।२ बाकी सब १।१ हैं। चतुर्मुखी ३, शिलापट ६।

क्रमसे संवतोंका विवरण।

९०७
१२२३
१२३४
१४०३
१४१४
१४४८
१४५८
१४७१
१५०२
१५०३
१५०७
१५१४
१५१५
१५१६
१५२२
१५२७
१५२८
१५३१
१५३२
१५३३
१५३७

१६०१
*१६१२
*१६३४
*१६४१
×१६५५
*१६५६
१६६०
*१६६९
*१६७२
१६७३
*१६७५
*१६७९
१६८८
*१६९४
*१६९७
१७००
१७०२
१७०३
१७१२
१७१६
×१७१८

१८१४
१८२६
१८३७
१८४१
१८४५
१८५३
१८५६
१८६६
१८७८
१९१९
१९३८
१९५०
१९५५
१९५७
१९५९
१९६४
१९६६
१९६७
१९७७
१९७९

१५४२
१५४८
१५४९
१५५०
१५५२
१५६६
१५७३
*१५८६
१५८९
१५९२
१५९५

*१७२९
*१७३१
×१७३२
*१७३८
*१७४६
१७५६
१७६७
*१७७७
१७७८
१७८०
१७८३

जिनके आगे कोई चिह्न नहीं हैं वे प्रतिमाओंके,* चिह्न केवल यंत्रोंके और × चिह्न यंत्र और प्रतिमा दोनोंके सम्बन्धोंके हैं।

जिन जिन राजाओंका उल्लेख हुआ है—

सोसंघ (स्योसिंह या शिवसिंह) रावल १५३३ और १५४८ में तथा रामसिंह सं०१५४८ में। अकबर सं० १६४१ में। अवरंगसाह (औरंगज़ेब) और राजा फतेसिंह सं० १७३२ में।

संघादि—

मूलसंघ, काष्ठासंघ, कुन्दकुन्दाचार्याम्नाय, लोहाचार्यान्वय, नंद्याम्नाय, नंदितरगण, बलात्कारगण, पुष्करगण, सरस्वतीगच्छ, माथुरगच्छ।

आचार्य, मुनि, ब्रह्मचारी, भट्टारक—मूलसंघ—उल्लेखित समय सहित।

आचार्य—कमलकीर्ति, धर्मश्रिया सं० १५१५। भुवनकीर्ति १५१६ रत्नकीर्ति १५८६। बाहुवलि १६६७—(१७'')

मुनि—ललितकीर्ति १५८६। बाहुनन्दी १६३४—(१६४''')

ब्रह्मचारी—कर्पूरप्रियगणि १७८०। ब्रह्म० हेमसागर १६५७

भट्टारक—भुवनकीर्ति १२३४। पद्मनन्दी १४७१। सिंहकीर्ति १५२२—१५२७। अजयकीर्ति १५३३। सिंहनन्दी १५४२। जिनचन्द्र १५४८। विजयकीर्ति………… १५६६। सुरेन्द्रकीर्ति १५६५। धर्मकीर्ति+धर्मचन्द्र १६३४। प्रभाचन्द्र+चन्द्रकीर्ति १६१२-१६६०+देवेन्द्रकीर्ति १६६६—१६७२— १६७५+हर्षकीर्ति १६७६। धर्मकीर्ति+धर्मचन्द्र १६३४। पद्मनन्दी+ज्ञानचन्द्र १६७५। चारित्रभूषण १६(६४)। महीचन्द्र १७०३। महेन्द्रकीर्ति १७१८। नरेन्द्रकीर्ति १७१६+सुरेन्द्रकीर्ति १७२६— १७३२। भुवनकीर्ति+ज्ञानभूषण १७३८+जगतभूषण+विश्वभूषण १७३१ जगतकीर्ति १७४६ +देवेन्द्रकीर्ति १७७७–७८। म० कीर्ति १७५६। धवलकीर्ति १७७८ जिनचन्द्र १८३७। सुरेन्द्रकीर्ति १८४५। गुणचन्द्र+ब्र०हेमसागर १६५७।

काष्ठासंघ।

मलयकीर्ति+गुणभद्र १५४६। क्षेमकीर्ति+त्रिभुवनकीर्ति+सहस्रकीर्ति १६८८। शुभकीर्ति १७००। गुणचन्द्र+सकलचन्द्र+मुनिचन्द्+धर्मचन्द्र+रूपचन्द्र १७३२। देवेन्द्रकीर्ति १७३२। कमलकीर्ति। राजेन्द्रकीर्ति+शुभचन्द्र १६३८।

कमलकीर्ति, गुणचन्द्र, जिनचन्द्र, देवेन्द्रकीर्ति, धर्मचन्द्र, पद्मनन्दी और भुवनकीर्ति इस नामके दो दो तथा सुरेन्द्रकीर्ति नामके तीनका उल्लेख हुआ है।

पण्डितगण लेखक—

देवदत्त ब्राह्मण, वसुपाल, जगद्रूप और कपूर जैसवाल। उदयभूपण।

सर्वाधिक प्रतिष्ठित मूर्त्तियां भट्टारक जिनचन्द्र (४१) देवेन्द्रकीर्ति (१५) और चन्द्रकीर्ति (१२) की हैं। तथा श्रावकोंमें सर्वाधिक नाम जीवराज पापड़ीवाल, और साह देवसी नरहरदास+सुखानन्दका उल्लेख हुआ है।

वंश गोत्रादिः—

अग्रवाल, खंडेलवाल, गिरिवास गोत्र (?) गंगवाल, भैंसा, जैसवाल, गोयल, काशलीवाल, गोलारारे, गृध्रवाल, सिंहल, चदौडिस (?) मुंगिल, गांगल, ओसवाल, पाटनी वघेरवाल, वादुवाड़ (?) ऋटुवाडु (?) पद्मावती पुरवाल, गोलसिंगारे, दशानन्दसिंहपुराज्ञातीय, अजमेरा इत्यादि।

स्थान नगरादिः—

आगरा, कानपुर, ढाका, दिल्ली, पटना, पाटन, पावापुरी, पुरसोनिया ग्राम, विहार मण्डल, वाराणसी—काशी, मधुकपुर, राणोली, सोनागिरः सम्मेद पर्वत सम्मेदगिर—मधुवन, मुड़ासा, कलकत्ता, उत्तरपाड़ा, हाथरस, इत्यादि ।

श्रावक-श्राविकायें:-

श्रावक—अमरसिंह, अजैराज, उग्रसेन, केशरसिंह, कपूरा, कुलदास, किशोरीलाल, खेमचन्द, खवैराज, खुशालचन्द, गुलालदास, गुलालचन्द, घासीराम, चतरा, चतुरपाल, छीतर, जीवराज, जगनाथ, जगसिंह, टीका, तेजा, तेजपाल, दीपचन्द देवसी, देवदास, धारापत धन्ना, धनपतिराय, निहालचन्द, नरहरदास, नाथू, पृथिवी, फूलड, फलहु, विहारीदास, वदरीनारायण, वंशीधर, वावूराय, वीका, वसतराय, भैरव, भीखू, भूरा, मोतीलाल, मनजी, मेघा, रायमल, राइचन्द, लखमीचन्द, लक्ष्मीदास, विजयसिंह विजयराम, वीतर, वेणीसाह, विसनचन्द, विमनासाह, शिवब्रह्म, श्रीलाल, सुन्दरदास, संगहोदास, सावल, सवलसिंह, सुखानन्द; सोना, सोनपाल, सेदराज, हीरा, हौलीसाह, हुलासीलाल, हेमराज. इत्यादि ।

श्राविकायें—अमरीवाई, अहंकारदे, कोयलदे, कवजदे, घूरणदे, चौसरदे, चतुरंगदे, धर्मवती धरणदे, धरमदे, नौलादे, नवरंगदे, पूरणदे, वहुरंगदे, चिस्वावाई, मथुरादे, लाडमदे, वायलदे, सुहमदे, सरूपदे, हीरादे, हमारदे, हरखमदे, इत्यादि ।

विशेष !

संवत् १९७८ में बड़े मन्दिरसे एक पाषाणकी पद्मासन प्रतिमा श्री पार्श्वनाथजीकी कोयलाघाट (कलकत्तेसे ३५ मील पश्चिम) के भाइयोंको दी गई थी। सं० १९७९ में हुगलीके मन्दिरसे एक प्रतिमा शरशाबाड़ी (जिला मैमनसिंह)के भाइयों को भेजी गई। सं० १९८० में मैमनसिंह (कलकत्तेसे २७१ मील पूर्व) के भाई निम्नलिखित तीन प्रतिमायें मैमनसिंह, रामइमरत-पुर और गौरीपुरके लिये ले गये :—

पृष्ठ ३—नं २। पृ० १०—नं० ५। पृ० १४—नं० ३३

शुद्धि पत्र।

स्थान	अशुद्ध	शुद्ध
१३ नं० २६	१३७२	१७३२
पृष्ठ२४ पंक्ति १२	पएड	चन्द्र